ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 10
माघ शुक्ला एकादशी
विक्रम संवत 2069
कलि संवत 5115
21 फरवरी से 5 मार्च 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 113

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री सत्यव्रत सामवेदी
श्री बलदेव राज आर्य
आर्य शिरोमणी पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्रीमती सरोज वर्मा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**

प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com

एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

जीवन और मृत्यु परमात्मा-अधीन

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे। प्रियस्तोत्रो।। ऋ० १/९१/६

ऋषि: **राहूगणो गोतम।।** देवता- **सोम।।** छन्द: - **गायत्री।।**

विनय- हे हृदयेश! हे देव! हे सोम! जब तुम्हारी इच्छा हमें संसार बहुत बार तेरे भक्तों से द्वेष करने लगता है, उन्हें सताता है और उन्हें मारना तक चाहता है। भक्त प्रहलाद को मारने की कितनी चेष्टाएँ की गईं! भक्त मीरा की जान लेने के लिए राजा ने कई बार यत्न किया; भक्त दयानन्द को लोगों ने कई बार जहर दिया, पर तेरी इच्छा बिना कौन मर सकता है? भक्त लोग इस तत्त्व को जानते हैं, अत: वे आनन्दित रहते हैं। मरने से डरने वाला यह संसार- तेरे ईश्वरत्व को न जानने वाला यह संसार- यों ही भय-त्रास और मरणाशंका से मरा जाता है, पर भक्त देखते हैं कि जब तक तेरी इच्छा नहीं है तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता; और जब तेरी इच्छा होगी तब तो मरना भी उनके लिए उतना ही आनन्ददायक होगा जितना कि तेरी इच्छा से जीना आनन्ददायक है। ओह, इस ज्ञान के कारण वे भक्त जीवित ही अमर हो जाते हैं, अभिनिवेश के क्लेश से पार हो जाते हैं। वे संसार की किसी भयंकर से भयंकर वस्तु से भी न डरते हुए, तेरे स्तोत्र गाते हुए निर्भय फिरते हैं। प्यारे स्तोत्रों से तुझे रिझाना या तेरे स्तुतिगान से जगत् में भक्ति का प्रसार करना, यही उनका कार्य होता है। अपनी रक्षा व अरक्षा की चिन्ता वे तुझपर छोड़ बेफिक्र हो जाते हैं। तू तो सम्भजन करनेवालों की रक्षा करनेवाला मौजूद ही है, तो उन्हें क्या चिन्ता? अहा! कैसी बेफिक्री और निरापद अवस्था है! अमृत्युता (अमरता) का कैसा आनन्द है!

शब्दार्थ- सोम = हे सोम! **त्वं च**= तुम यदि **न:** = हमारे **जीवातुम्** = जीवित रहने की **वश:** = इच्छा करते हो तो न **मरामहे**= हम मर नहीं सकते। **प्रियस्तोत्र:** = तुम प्रिय स्तोत्रवाले हो और **वनस्पति:** = संभजन करनेवालों के रक्षक हो।

आवश्यक सूचना:- आर्य समाजों के वार्षिक चित्र, निश्चित कोटि, दशांश एवं आर्य मार्तण्ड शुल्क जमा कराने के लिए पूर्व में चार माह से आर्य मार्तण्ड के माध्यम से निरन्तर सूचना दी जाती रही है। विदित रहे कि आर्य समाजों का प्रतिवर्ष वार्षिक चित्र भेजना अनिवार्य है। जिन समाजों ने वार्षिक चित्र दशांश, निश्चित कोटि व आर्य मार्तण्ड शुल्क अभी तक नहीं भेजा है वे दिनांक 28 फरवरी 2013 तक अवश्य भेज दे इसके बाद कोई समय सीमा नहीं बढ़ाई जायेगी। 3 मार्च 2013 को आगामी सत्र के निर्वाचन की प्रक्रिया प्रारम्भ करने हेतु कार्यकारिणी की बैठक बुलाई जा रही है।

जिन समाजों ने बैंक में सीधा पैसा जमा करा दिया है वे रसीद की फोटो कॉपी एवं प्रपत्र सहित सभा कार्यालय में तुरन्त भेज दे। ताकि उनका नाम सूचिबद्ध किया जा सके। कृपया इस कार्य को प्राथमिकता दे। बैंक अकाउंट नं. यू.को. बैंक 18830100010430 -अमरमुनि, मंत्री

जहाँ तक हो सके निरन्तर हंसते (प्रसन्नचित्त) रहो । यह सस्ती दवा है।

जागो आर्य वीरो जागो

संपादकीय

आज जिधर देखो उधर उदासीनता का वातावरण सर्वत्र व्याप्त है। यही निराशा हमारी अकर्मण्यता का द्योतक है और यही अकर्मण्यता हमें पतन की ओर धकेलती है। ऋषि दयानन्द के प्रेरणादायी जीवन से उत्सर्जित आर्य वीरो उठो! साहस का संचरण कर आशावादी बनो। यद्यपि आशा और निराशा के झूले में झूलना मानव की सहज प्रकृति है किन्तु इस वैचारिक मंथन की परिणति आशावादी होनी चाहिए। इसके लिए ईश्वर ने हमें विवेक जन्यबुद्धि प्रदान की है। यह जीवन शोक करने के लिए नहीं अपितु कुछ कर दिखाने के लिए एवं सत्कर्म करने के लिए बना है। जीवन में अनेक बाधाएँ आती है। ऋषि के जीवन में क्या कम बाधाएँ आई? किन्तु क्या वे बाधा रूपी कंटको से विचलित हुए? अपने जीवन के उद्देश्यों को निर्धारित कर, आशावादी दृष्टिकोण से पूरे उत्साह एवं जोश के साथ जीवन पथ पर आगे बढ़े। इस प्रकार ऋषि के मिशन को पूरा करते हुए हम वैदिक धर्मानुसार आर्य समाज व मानव मात्र की सच्ची सेवा कर सकेंगे। किसी कवि ने कहा है-

जीवन पथ पर चलते-चलते, बड़ी-बड़ी बाधाएँ आती हैं।
पर जो नहीं रुके बाधा से, बाधाएँ उनसे डरती है।
नाश कर तिमिर का धरा से, दीप से जलते रहो तुम।
निष्काम कर्म करते हुए, सार्थक जीवन करो तुम।

सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने मानव की उत्पत्ति सार्थक उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त ही की है। यद्यपि उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं किन्तु उस दिव्य शक्ति ने हमें उन बाधाओं पर विजय प्राप्ति के साधन भी उपलब्ध कराये है। हम अपनी विवेकशील बुद्धि द्वारा उन साधनों को सही परिपेक्ष में पहचाने एवं उनका सही दिशा में उपयोग करें। तभी हमारा उद्देश्य सार्थक सिद्ध होगा। यही सच्चा जीवन है।

किन्तु ध्यान रहे आपका उद्देश्य वेदानुकूल सत्य पर आधारित हो। समाज व राष्ट्र के हित चिन्तन में हो तथा मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हो। आज आवश्यकता है स्वयं को पहचानने की, आत्मविश्वास की अतः हिम्मत मत हारो, निराशावादी मत बनो। ईश्वर सबका कल्याण करेगा।

ऋषि दयानन्द का मिशन तभी पूरा होगा जब हम संगठित होकर वेद मार्ग का अनुसरण करते हुए आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सत्यनिष्ठा व समर्पित भावना से लग जावें। यही हमारा वैदिक धर्म है। यदि सच्चे मायनो में हम आर्य बने तो निश्चय ही विश्व समाज हमारा अनुगामी बनेगा।

यदि हम गम्भीरता पूर्वक चिन्तन करें तो महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, लाला लाजपत राय जैसे अनेक पहली व दूसरी पक्ति के महापुरुषों के बाद आज आर्य समाज को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। क्यों? क्या हम निराशावादी बनते जा रहे हैं? क्या हम सामाजिक संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए पर्याप्त प्रयास व समय नहीं दे पा रहे है? क्या ये हमारी निराशा के मूल कारण तो नहीं है? ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपने जीवनोद्देश्य से भटक रहे हैं। हम एकाकी बनते जा रहे है। हम केवल अपने अस्तित्व के लिए चिंतित है व संघर्षरत रहते है। इस प्रकार हम आर्य समाज की उन्नति के पावन लक्ष्य से विमुख होते जा रहे है।

ऐसा नहीं है कि पृथ्वी वीरों से खाली है। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाज में वैदिक विद्वान, सदाचारी, सत्यनिष्ठ व कर्मठ लोग जिनका सदाचार पूर्ण नियमित जीवन है, ऋषि के परम भक्त है वेदानुरागी है, वेदोपदेशक आज भी है किन्तु ऐसे आर्यवीरों का अनुपात घट रहा है यह स्थिति चिन्ताजनक है। परिणाम स्वरूप स्वार्थी, अवसरवादी, पदलोलुप व्यक्ति आर्य समाज एवं अन्य समाजों द्वारा संचालित संस्थाओं तथा संगठनों पर हावी होते जा रहे है। यह एक चिन्तनीय विषय है।

आज आवश्यकता है ऐसे सदाचारी, त्यागी, तपस्वी व उदारमन लोगों की जो आर्य समाज की संगठन शक्ति को सुदृढ़ बना सकें। अतः आर्यो जागो, संभलो, अपने उद्देश्य को पहचानों और उसके अनुरूप वैदिक धर्म व आर्य समाज की उन्नति के कार्य हेतु प्राणपण से जुट जाओ। - अमर मुनि

नैतिक दृश्य सामग्री प्रयोग से संस्कार देना

आर्य समाज भीलवाड़ा में दिनांक 17 फरवरी 2013 को आर्य समाज की कार्यकारिणी एवं आर्यवीर दल राजस्थान के सदस्यों की एक बैठक हुई। जिसमें यह प्रस्ताव प्रधान श्री विजय शर्मा के द्वारा प्रस्तुत किया गया कि हमारा प्रचार दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के माध्यम से किया जावे।

उन्होंने कहा कि भीलवाड़ा के मेवाड़ क्षेत्र के बच्चों के नैतिक तथा शारीरिक विकास के लिए आगामी ग्रीष्मकाल में शिविर का आयोजन किया जावेगा। कार्यक्रम का संचालन आर्यवीर दल के कार्यकारी अध्यक्ष देवेन्द्र शास्त्री ने किया। -गोपाल शर्मा, प्रवक्ता आर्य समाज भीलवाड़ा

यज्ञ उसको कहते है जिससे विद्वानों का सत्कार, यथा योग्य शिल्प अर्थात् रसायन ज्यो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्या आदि गुणों का दान, अग्नि होत्र आदि जिससे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाता है, उसको उत्तम समझता हूँ। -महर्षि दयानन्द

आर्य वीर दल राजस्थान

आर्य समाज भीलवाड़ा में मेवाड़ क्षेत्र के आर्य समाज व आर्य वीर दल के विशिष्ट प्रतिनिधियों की एक बैठक रविवार प्रातः हुई। जिसमें मेवाड़ क्षेत्र के प्रतापगढ़, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ तथा भीलवाड़ा जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रातः 9 बजे सभी प्रतिनिधियों ने मिलकर यज्ञशाला पर यज्ञ सम्पन्न किया। उसके बाद 11 बजे बैठक हुई, जिसमें छोटी सादड़ी प्रतापगढ़ के समर्थलाल आर्य ने आज के युवाओं में आ रही नैतिक गिरावट के कारण रोज संस्कार विहीन घटित घटनाओं की चर्चा की। उदयपुर के जीवन लाल ने बताया कि हमें भारतीय संस्कृति व चरित्र को सुरक्षित रखने के लिए मेवाड़ के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में व्यक्तित्व विकास की कार्य शालाएँ आयोजित करनी होगी। चित्तौड़ निम्बाहेड़ा के राधेश्याम धाकड़ ने बताया बच्चों की नैतिक पाठशाला उनके माता पिता से शुरु होती है, उन्हें स्वयं आगे आना होगा। चित्तौड़ के ही योगेन्द्र आर्य ने नियमित चरित्र निर्माण कार्यक्रम संचालित करने की बात कहीं। रायला भीलवाड़ा के कैलाश आर्य ने कार्यक्रमों की वार्षिक रूपरेखा बनाने का सुझाव दिया। -देवेन्द्र शास्त्री

जिसने अपने को बश में कर लिया, उसकी जीत को देवता भी हार में नहीं बदल सकते।

मन के दीप जले

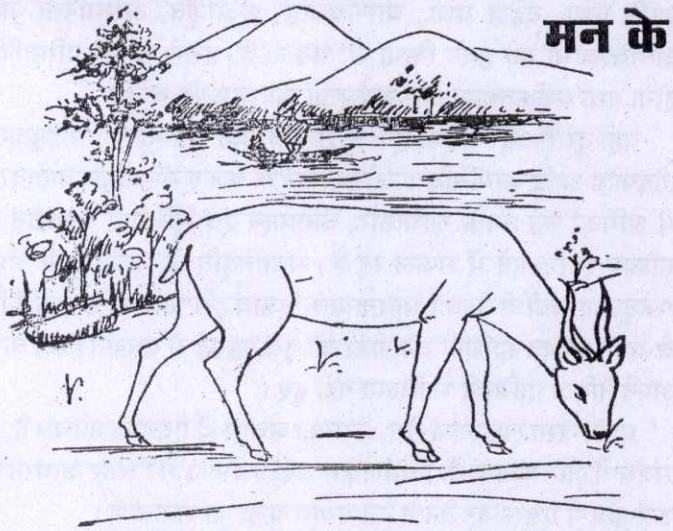

अपनी कस्तूरी से अज्ञात हरिण ज्यों,
अपने से बाहर सुरभि ढूँढ़ता फिरता,
आन्तरिक-सुखों से हो विरक्त त्यों मानव
वासना काम के गंदले-जल में तिरता।

बाहर तो केवल माया की भटकन है,
है घोर अविद्या की काली-सी छाया;
आनन्द-सुरभि तो अन्तर में बसती है,
'सोऽहम' में प्रतिबिम्बित है डसकी काया।

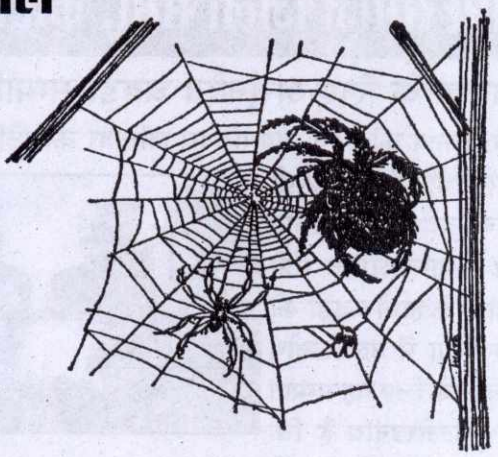

अपने ही रचे जाल में फँसकर जैसे
हो जाती है मकड़ी अशक्त बेचारी,
त्यों ही निज कर्मों के ताने-बाने में
फँस जाती मानव की चेष्टाएँ सारी।

जो 'कर्म' बना था उसे मुक्त करने को
वह माया में फँसकर बंधन बन जाता,
चेतन होकर भी जड़ता की कड़ियों को
है ज्ञानहीन नर जीवन भर अपनाता।

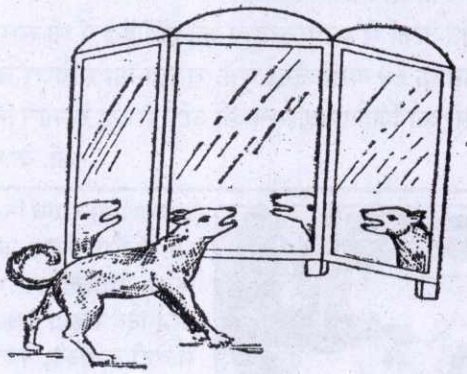

भोंकता अज्ञान-वश ज्यों श्वान
बिम्ब को ही शत्रु अपना जानकर,
मनुज बोता शत्रुता के बीज
अहम् को ही इष्ट अपना मानकर।

भूल जाना सृष्टि का यह रूप
एक चेतन तत्व का है प्रस्फुटन
भिन्नता तो मात्र मन की भ्रान्ति है,
एक ही सत् है, उसी को कर नमन्।

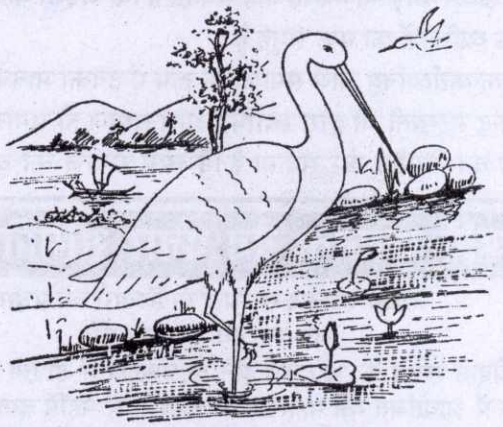

वक की झूठी भाव - भंगिमा से
ज्यों मीन ठगी जाती ।
त्यों मिथ्या आडम्बर से मन
की कालिमा ढ़की जाती।

छलना की मोहक छाया में
जीवन बेसुध सो जाता;
पार्थिव-भोगों के कर्दम में,
मन्त्र-मुग्ध हो खो जाता ।

जिह्वा केवली तीन इंच लम्बी होती है। परन्तु वह छह फुटे आदमी को कत्ल कर सकती है।

आर्य समाज जिला सभा, कोटा

समाजसेवा के लिए अर्जुनदेव चढ्ढा सम्मानित

भारतीय गणतंत्र की 64वीं वर्षगांठ पर शनिवार को स्टेडियम में आयोजित समारोह में समाजसेवी अर्जुनदेव चढ्ढा को सम्मानित किया गया। स्वायत्तशासन मंत्री शांति धारीवाल के हाथों चढ्ढा को उनके समाजसेवा में उल्लेखनीय कार्य किए जाने के लिए यह सम्मान दिया गया। उल्लेखनीय है कि विभाजन की त्रासदी और संघर्षों में पले बढ़े चढ्ढा ने बचपन से ही समाजसेवा को अपने जीवन का आधार बना लिया था। नशामुक्ति, कुष्टरोगी सेवा, निशक्तजन सेवा, सेरीब्रल पॉल्सी जागरूकता, वृद्धजन सेवा, रक्तदान, नेत्रदान के कार्यों से वे निरंतर जुड़े रहे हैं। शोषित, पीड़ित, गरीब तथा असहाय लोगों की सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहे हैं।

चढ्ढा पारिवारिक जरुरतों को पूरा करने के लिए पढ़ाई को अधूरा छोड़कर पहले राणा प्रताप सागर और फिर डीसीएम की एसएफसी ईकाई का कार्य ग्रहण किया। यहीं से सर्वांगीण विकास एवं सर्वकल्याण की भावना को सही अर्थों में एक प्रभावी आकार मिला। निर्धन, निराश्रित एवं जरूरतमंद बच्चों में टॉफियां, खिलौने बांटने हो या शोषित महिलाओं को देखकर कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि चढ्ढा कोई व्यक्ति नहीं बल्कि व्यक्तियों का एक समूह है।

एक कर्तव्यनिष्ठ आर्य समाजी के रूप में उनका मानना है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज ही समाज में उस हवन कुण्ड का निर्माण कर सकता है। जिसमें समाज की कुरीतियों यथा जाति प्रथा, दहेज प्रथा, बालविवाह, छूआछूत, असमानता और अंधविश्वासों को हवन किया जा सकता है। इससे समाज परिमार्जित होगा तथा सर्वकल्याण और सर्वसुखों की धराभूमि बनेगा।

वहीं दूसरी ओर चढ्ढा एक कुशल श्रमिक नेता के रूप में हड़ताल, तोडफोड आदि कार्यविधियों को अपनाने के बजाए सौहार्दपूर्ण वातावरण में श्रमिकों को उनके अधिकार, वेतनमान एवं सुविधाएं बातचीत के माध्यम से दिलाने में सफल रहे हैं। सेवानिवृति के पश्चात भी अपने मजदूर साथियों से उनका भावनात्मक जुडाव इस बात का द्योतक है कि वे अपने अभिन्न साथियों की पीडा को पूरी गहराई से समझते हैं। वे कभी अपने नैतिक दायित्वों से विलग नहीं हुए।

एड्स जैसा लाइलाज रोग, जिसका बचाव ही एकमात्र उपचार है, के संबंध में जागरूकता के निर्माण हेतु चढ्ढा 1992 से निरंतर कार्यरत हैं। उन्हें क्षेत्र में एड्स जनचेतना का पर्याय कहा जा सकता है।

चढ्ढा स्वयं तो नेत्रदान की घोषणा कर ही चुके हैं, लेकिन इससे पहले 1987 में अपने माता-पिता फिर पत्नी एवं हाल ही में अपने बड़े भ्राता का मरणोपरांत नेत्रदान कर सूनी आंखों में रोशनी के लिए अलख जगा चुके हैं। इन्होंने इस संबंध में लोगों की भ्रांतियों को भी दूर किया है।

चढ्ढा ने स्वयं 44 बार तथा इनके दोनों पुत्रों ने क्रमशः 22 बार और 34 बार रक्तदान किया। भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय उनके द्वारा किए गए कार्यों ने उन्हें मानवता का सच्चा हमदर्द सिद्ध किया। पंजाबी समाज के प्रति दायित्व को विस्तार दिया है। इन उल्लेखनीय कार्यो के लिए चढ्ढा को विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय-समय पर सम्मानित किया गया है।

असीमित ऊर्जा से भरपूर चढ्ढा का हॉलेण्ड में भी सम्मान किया जा चुका है। उम्र के 69 बसंत देख चुके चढ्ढा का समाजसेवक के रूप में नाम है। उसी को जिला प्रशासन की ओर से यह सम्मान दिया गया है।

-डॉ. के.एल. दिवाकर

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का प्रचार
जन-जन तक हो पूनम सूरी

डीएवी संस्था के 127 वर्ष होने के उपलक्ष में डीएवी पब्लिक स्कूल कोटा में आयोजित यज्ञ महोत्सव के अवसर पर महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा द्वारा महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी का शुभारंभ आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी प्रधान डीएवी कॉलेज प्रबंधकर्त समिति नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा हुआ।

प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए श्री पूनम सूरी ने कहा कि महर्षि दयानन्द युग पुरुष थे। महर्षि दयानन्द के विचारों, उनके द्वारा किये गए समाज सेवा के कार्यो एवं कुरीतियों को दूर करने के कार्यो का प्रचार जन जन तक होना चाहिये। एक पांडाल में महर्षि दयानंद का सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं वैदिक साहित्य उपलब्ध कराना अच्छा प्रयास है।

महर्षि दयानंद वेद प्रचार समिति कोटा के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि कोटा में आयोजित राष्ट्रीय मेला दशहरा में गत 15 वर्षो से यह प्रदर्शनी आयोजित हो रही है। पिछले 3 वर्षो से नगर निगम कोटा द्वारा धार्मिक प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। मेले में

प्रचारार्थ सस्ता एवं निःशुल्क साहित्य भी बितरित किया जाता है। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने कहा कि प्रदर्शनी में बेटी बचाओ, नेत्रदान, रक्तदान, जल बचाओ, पर्यावरण एवं नशाबंदी के आकर्षक पोस्टर लगाकर सामाजिक चेतना का कार्य किया जा रहा है।

प्रदर्शनी को शिक्षकों विद्यार्थियों एवं उनके परिवारजनों ने देखा एवं महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा ली। प्रारंभ में जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा मंत्री कैलाश वाहेती कोषाध्यक्ष जे.एस. दुबे महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा के प्रधान अरविंद पाण्डेय मंत्री प्रभुसिंह कुशवाह कोषाध्यक्ष दिनेश शर्मा ने पुष्पहार से स्वागत किया। इस अवसर पर डीएवी पब्लिक स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती अंजु उतरेजा समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक चन्द्रमोहन कुशवाह गुमानसिंह आर्य अग्निमित्र शास्त्री श्योराज वशिष्ठ आदि आर्यजन उपस्थित थे।

- अरविन्द पाण्डेय, प्रधान

जीवन में कुछ कर के दिखाने का, कुछ बन के दिखाने का व्रत लें।

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज पटेल नगर सैक्टर 15 पार्ट द्वितीय, गुडगांव की ओर से दिनांक 16 जनवरी से 20 जनवरी 2013 तक पाँच दिनों तक पटेल नगर व सैक्टर 15 पार्ट द्वितीय के पार्कों में एवं गली मौहल्ले में विभिन्न जगहों पर वेद प्रचार का कार्य किया गया।

आचार्य देशराज जी भरतपुर (राज.) एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विमल देव जी अग्निहोत्री-बरेली (उ.प्र.) ने वेद उपदेश, घर गृहस्थी कैसे सुखी रहे तथा ईश्वर एक है तथा वेद ईश्वरीय ज्ञान है, आर्य समाज के दूसरे नियम की विस्तार से चर्चा की, विमल देव जी भजनोपदेशक ने राम वनवास का ऐसा चित्रण अपने भजनों के माध्यम से किया कि लोगों की आँखे नम हो गई। उपस्थित लोगों ने इस प्रचार कार्यक्रम को बहुत पसंद किया तथा आग्रह किया कि समय-समय पर आर्य समाज मंदिर से बाहर निकलकर गली, चौराहो, पार्कों में ऐसा प्रचार कार्य होते रहने चाहिये।

इस अवसर पर डॉ. सुनील आर्य के छोटे बच्चो ने संध्या के कुछ मंत्र एवं स्वामी दयानन्द जी के बारे में माइक पर जनता के बीच बोलकर सभी को मोहित कर दिया। लोगों ने उत्साह पूर्वक दान देकर भरपूर सहायता की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पदमचंद आर्य प्रधान, ईश्वर दधिया मंत्री, रामअवतार गोयल, सुरेश गुप्ता, जयप्रकाश शर्मा, लालचंद गुप्ता, वेद प्रकाश मनचंदा कोषाध्यक्ष व सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

- पदमचंद आर्य, प्रधान

आर्येशानन्द ने पूर्ण किए चिकित्सा सेवाके 50 वर्ष

(50वीं वर्षगांठ पर हुए विविध धार्मिक कार्यक्रम)

डॉ. एमल, एल राव आर्यप्रेमी उर्फ स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती के पिण्डवाडा में चिकित्सा सेवा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर मनन आश्रम कांटल में स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सेवी तथा वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेश चन्द सुराणा ने की। मकर संक्रांति के पवित्र पर्व पर हुए इस समारोह में परम श्रद्धेय महन्त शंभुनाथ जी महाराज आम्बेश्वर, मोहननाथ जी, महन्त तीर्थगिरिजी, शंकरदासजी, जोगपुरीजी, रमेशपुरीजी, निर्भयनाथजी, रामदासजी, रमेशगिरिजी आदि संतों ने शिरकत की। कार्यक्रम में प्रातः 10 बजे शिवगंज की आचार्य धारणा दीदी एवं गुरुकुल की कन्याओं द्वारा वैदिक यज्ञ किया गया। 11 बजे महन्त शंभूनाथजी को 'आयशपीर' की पदवी एवं गादी मिलने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया। तदुपरांत सभी आदरणीय संतों को बारी बारी से माल्यार्पण कर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समस्त संतों को आर्येशानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां भेंट की गई। शिवगंज गुरुकुल की कन्याओं, वरली आदिवासी छात्रावास की कन्याओं, कांटल, गडिया और आस पास के गांवों से आए आदिवासियों को भी शॉलें भेंट की गई। स्कूली छात्रों को पारितोषिक वितरित किए गए। इसके अतिरिक्त रामदेव सत्संग मण्डल के समस्त सदस्यों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। आगन्तुक मेहमानों ने डॉ. एम.एल. राव आर्य प्रेमी उर्फ स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती के पिण्डवाडा में चिकित्सा सेवा में पिछले 50 वर्षों से दी जा रही सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। गौरतलब है कि आर्येशानन्द सरस्वती की स्थानीय नगर में लगातार 25 अगस्त 1962 से 2012 तक चिकित्सा सेवा से न सिर्फ पिण्डवाडा बल्कि आस पास बीसों गांव के लोग लाभान्वित हुए है। बाहर से पधारे साधु संतों के अतिरिक्त पिण्डवाडा तथा आस पास के गणमान्य लोगों ने भारी संख्या में अपनी उपस्थिति दी।

गुरुकुल आश्रम आमसेना की अपील

प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रेमी, देश की एकता व अखण्डता में विश्वास करने वाले श्रद्धालु सज्जनों से एक निवेदन

इस समय हमारा देश विदेशी सभ्यता संस्कृति की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है। नई पीढ़ी के युवक युवती प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा की बात सुनना नहीं चाहते वे विदेशियत के रंग में रंगते जा रहे हैं फलस्वरूप विदेशियत फल-फूल रही हैं वे येन केन प्रकारेण वैदिक शिक्षाऐं जहां राम कृष्ण की संस्कृति की बात सुनकर चिढ़ जाते है। ऐसी विषम परिस्थिति में भी हमें वैदिक धर्म एवं प्राचीन संस्कृति की रक्षा करनी है विशेष कर पूर्वांचल के प्रान्तों में जहां कुछ श्रद्धालु सज्जन भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना चाहते हैं उनके बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करके उन्हें प्रोत्साहित करना है। आसाम में विद्यालय छात्रावास बनाने के लिए उनका भावना भरा आग्रह है।

इसी प्रकार आसाम में डीन्गान्डु तथा लंका के निवासियों ने अपने ग्राम में विद्यालय खोलने का विशेष आग्रह किया है। वहां के बोडो जाति के निवासी जो भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखते हैं अपने आप को आर्य (हिन्दू धर्म) एवं देश से जुड़ा मानते हैं वे अपने बच्चों को ईसाईयों के स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहते वे विद्यालय बनाने एवं भविष्य में कुछ आय के लिए भूमि देने के लिए तैयार हैं अतः वहां यथाशीघ्र विद्यालय की भवन बनाकर आगामी नये सत्र से विद्यालय चलाना है।

इसी प्रकार गोलाघाट जिले के सरुपथार कस्बे में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम संघ दिल्ली की देख रेख में एक 12वीं कक्षा तक का विद्यालय चल रहा है। परन्तु वहां छात्रावास नहीं है इस विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र ईसाइयों के छात्रावास में रहते हैं उस छात्रावास में रहने से छात्रों पर विदेशियत का प्रभाव पड़ता है वहां यथाशीघ्र छात्रावास बनाना है इन दोनों स्थानों पर प्रारंभिक रूप से भवन आदि बनाने के लिए कम से कम 20 लाख रुपये तत्काल चाहिएं। क्योंकि यहां की अपेक्षा वहां महंगाई दो गुनी है अतः देश धर्मप्रेमी वैदिक संस्कृति की रक्षा करने के इच्छुक उदारमना देशभक्त सज्जनों से आग्रह है कि यथाशीघ्र निम्न पते पर अधिक से अधिक सहयोग देकर अनुगृहीत करें। आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम से एस.बी.आई. खाता नं.- 11276777048 खरियार रोड़ में भेजें। ध्यान रहे गुरुकुल को दिये दान पर आयकर की छूट है।

- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, नवापारा

जो बदला लेने की बात सोचता है वह अपने ही घाव को हरा रखता है।

आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर का वार्षिकोत्सव

दिनांक 8 फरवरी 2013, शुक्रवार को वैदिक विद्या मंदिर स्वामी दयानन्द मार्ग के विशाल सभागार में अत्यन्त धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया।

विद्यालयी छात्रा मारग्रेट ने अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया। तत्पश्चात समिति निदेशिका श्रीमती कमला शर्मा द्वारा समारोह के मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता तथा समारोह अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार आर्य एवं समिति सदस्यों को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर की इन्चार्ज सुश्री अन्नु द्वारा समिति सदस्यों का स्वागत किया गया तथा विद्यालय की गतिविधियों व प्रगति पर प्रकाश डाल गया।

स्वागत कार्यक्रम के पश्चात स्कूल के नन्हे छात्र-छात्राओं द्वारा अत्यन्त आकर्षक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसकी सभी के द्वारा मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई। विद्यालय के नन्हें बच्चों ने ईश वन्दना, ग्रुप डांस, इंग्लिश प्ले, एक्ट, कव्वाली, देशभक्ति गीत आदि का अद्भुत प्रदर्शन किया। बच्चों की प्रत्येक प्रस्तुति पर हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा।

रंग बिरंगे परिधानों में सजे नन्हें बालकों ने 'बच्चे मन के सच्चे', 'बम बम बोले मस्ती में डोले', 'तारे जमीं पर', 'यू आर गुड सोल्जर', 'अपनी पाठशाला मस्ती की' जैसे गीतों पर थिरकना शुरू किया तो सब ने खूब प्रशंसा की। एक तरफ 'आओ' बच्चों पेड़ लगाएँ गीत द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संदेश दिया गया तो दूसरी तरफ बच्चों द्वारा संगीत की धुन पर माँ के दिल जैसा दुनिया में कोई दिल नहीं प्ले द्वारा माँ की ममता पर बल दिया जो कि विशेष सराहनीय रहा। नन्हें बालकों द्वारा 'Never tell a lie' नामक इंग्लिश प्ले एवं आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिन्दुस्तान की पर मोहक अभिनय किया गया जिससे सभी दर्शकों द्वारा सराहा गया।

समिति निदेशिका श्रीमती कमला शर्मा ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि समिति ने वैश्वीकरण के युग में अंग्रेजी के महत्व को समझते हुए अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोले जिनमें वैदिक संस्कृति के साथ सस्ती व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने में सफल रहे है।

अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने कार्यक्रम के अंत में कहा कि आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। मूल्य विहीन शिक्षा से युवा वर्ग अपनी राह से भटक जाता है। अतः स्वस्थ भारत का निर्माण करने के लिए माता-पिता द्वारा बच्चों को अच्छे संस्कार तथा शिक्षकगण को अच्छी शिक्षा देनी चाहिए। साथ ही उन्होंने बच्चों के प्रदर्शन की भी विशेष सराहना की।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावक व अतिथि उपस्थित थे।

आर्य कन्या विद्यालय समिति के संस्थापक स्व. श्री छोटूसिंह की षष्ठम् पुण्यतिथि के अवसर पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

दिनांक 14 फरवरी 2013 को प्रातः 11 बजे आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में 'मॉडल एवं चार्ट प्रदर्शनी' प्रतियोगिता आयोजित की गई। श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने रिबन काटकर प्रतियागिता का उद्घाटन किया। प्रधानाचार्या श्रीमती नेहा जादौन ने मुख्य अतिथि जी, माता शारदा देवी आर्य तथा निर्णायक मण्डल में श्री सुरेश दर्गन, श्रीमती इन्द्रा आर्य एवं श्रीमती विभा भार्गव थी।

प्रतियोगिता में आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग, आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां मेवात नगर तथा आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कला एवं विज्ञान विषय पर छात्र-छात्राओं ने 'बिजली बचाओ', 'सात बजूबे दुनिया के', 'व्यवसाय के क्षेत्र', 'सरिस्का टागर प्रोजेक्ट', 'रेल्वे ट्रैक', 'पवन चक्की', 'यज्ञशाला', 'शॉपिंग मॉल', 'मकानों के प्रकार', 'जंगल बचाओ', 'इग्लू', 'वॉल्कनो' आदि विषयों पर मॉडल बनाये जिनमें से प्रथम स्थान पर (सरिस्का टागर प्रोजेक्ट) आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां, द्वितीय स्थान पर(सात अजूबे दुनिया के) आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां एवं तृतीय स्थान पर (जंगल बचाओ) आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग रहे। आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर (शॉपिंग मॉल) को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए मॉडलों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रकृति से प्रेम करने, अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने, जानवरों को बचाना, बिजली बचाना, अपनी आवश्यकता एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार मकान बनाने, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएं निर्मित करने का संदेश किया।

दिनांक 15 फरवरी 2013 को प्रातः 11 बजे आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां मेवाती नगर, अलवर में फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि कैप्टन रघुनाथ सिंह तथा डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य ने अध्यक्षता की। विद्यालयी छात्रा विनीता ने मुख्य अतिथि, निर्णायक मण्डल एवं अतिथियों का अतिथिगण का तिलक लगाकर स्वागत किया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में श्रीमती मोहिनी देवी गुप्ता, श्रीमती इन्द्रा आर्य एवं श्रीमती संजू गर्ग थी।

प्रतियोगिता में आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग, आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां मेवात नगर तथा आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता का प्रारंभ ईश प्रार्थना 'ओ३म् विश्वानि देवाय' से हुआ। प्रतिभागियों ने 'डिटॉल', 'पेड़', 'स्वामी विवेकानन्द', 'सुभाष चन्द्र बोस', 'डस्टबिन', 'साईकिल', 'मोबाईल', 'चाईल्ड लेबर', 'सिगरेट', 'बालिका वधू', 'बंदर', 'छोटा भीम', 'गब्बर', 'हाड़ा रानी', 'भूत', तथा 'पागल', 'वाअर ड्रॉप', 'हाउस मेड', 'कॉमन मैन', 'सिलेण्डर' बनकर सभी का मनोरंजन किया। जिनमें से प्रथम स्थान पर (बालिका वधू) आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर,

जो व्यायाम के लिए समय नहीं निकालते, उनको बिमारी के लिए समय अवश्य निकालना पड़ेगा।

द्वितीय स्थान पर (साईकिल) आर्य पब्लिक स्कूल हसन खां एवं तृतीय स्थान पर (सिगरेट एवं पागल) आर्य पब्लिक स्कूल स्वामी दयानन्द मार्ग रहे। बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए सभी ने प्रत्येक प्रतिभागी का करतल तालियों से स्वागत किया। प्रतिभागियों ने नये-नये विषय लेकर देश में व्याप्त अंधविश्वास, बाल विवाह, महंगाई, धूम्रपान आदि बुराइयों को दूर कर अच्छा समाज बनाने का संदेश दिया। निर्णायक श्रीमती मोहिनी जी का कहना था कि शिक्षण संस्थाओं में इसी प्रकार के शिक्षाप्रद कार्यक्रम होने चाहिए जिससे बच्चों के शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास भी हो।

- कमला शर्मा, निदेशिका

ईश्वरीय ज्ञान में समस्त ज्ञान विज्ञान होगा

ईश्वरीय ज्ञान होने से वेद सम्पूर्ण ज्ञान का कोष है, समस्त ज्ञान-विज्ञान के आधार है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1876 में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा कि - 'वेद में समस्त ज्ञान-विज्ञान भरा है।' विज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) परमेश्वर से तृण पर्यन्त पदार्थों तक साक्षात् बोध कारक है अथवा 'कर्म, उपासना, ज्ञान का यथावत् उपयोग लेना और तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध करना विज्ञान है।'

उनकी इस मान्यता और विज्ञानविषयक मान्यताओं का विवेचन करते हुए योगिराज अरविन्द लिखते हैं- ''दयानन्द की इस धारणा में कि वेद में धर्म और विज्ञान दोनों की सचाइयाँ पाई जाती हैं, कोई भी उपाहासास्पद या कल्पनामूलक बात नहीं है। इसके साथ मैं अपनी धारणा जोड़ना चाहता हूँ कि वेदों में विज्ञान की वे सचाइयाँ भी हैं जिन्हें आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जान पाया है। ऐसी अवस्था में स्वामी दयानन्द ने वैदिक विज्ञान की गम्भीरता के सम्बन्ध में अतिशयोक्ति से नहीं, न्यूनोक्ति से ही काम लिया है।'' (Dayananda and the Veda)

इस विषय में अमरीकन विदुषी श्रीमती व्हीलर विल्लौक्स लिखती है- ''यह भारत उन वेदों की भूमि है जो अद्‌भुत ग्रन्थ हैं, जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक सिद्धान्तों का समावेश है, अपितु इन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रॉन, वायुयान आदि सभी कुछ वेदों के द्रष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होता है।''

महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् नारायण भवानीराव पावगी अपने दूसरे विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ "The Vedic Fathers of Geology" में -

'येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा' (ऋ. १०/१२१/५)

'या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा' (ऋ. १०/७८/१)

'स प्राचीनान् पर्वतान् दृंहदोजसाधराचीनमकृणोदपामपः' (ऋ.२/१७/५)

'यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्' (ऋ.२/१२/२)

इत्यादि मंत्रों के आधार पर वेदों में भूगर्भविद्या का मूल बताया है।

बम्बई के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वी.जी.रेले के अनुसार वेदों में जीव विज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

श्री पन्यम नारायण गौड ने अपनी महत्त्वपूर्ण पुस्तक (Introduction to the message of the 20th century) में इस बात को सप्रमाण प्रमाणित किया है कि वेदों में भौतिकी और रसायन शास्त्र के तत्त्व स्पष्टतया पाये जाते हैं।

महर्षि दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर उस समय प्रकाश डाला जबकि वैज्ञानिकों के अनुसंधान प्रगति की प्रतीक्षा में थे। उन्होंने निम्न विषयों पर प्रकाश डाला है- वेद में ब्रह्मविद्या, सृष्टिविद्या, विज्ञान-काण्ड, पृथिव्यादिलोक-भ्रमण-विषय, आकर्षणानुकर्षण, प्रकाश्य-प्रकाशक विषय, गणितविद्या विषय, नौविमानादि-विद्या विषय, तार-विद्या, राजा-प्रजा-धर्म, स्तुति-प्रार्थना-याचना-समर्पण, पठन-पाठन, उपासना, मुक्ति, वर्णाश्रम, पंच-महायज्ञ आदि विषय मुख्यतः हैं। संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि तृण से लेकर परमेश्वर तक को जानने का साधन ईश्वरकृत वेद ही है।

यास्काचार्य वेद की विशेषता बताते हुए लिखते हैं-

'पुरुषविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिमंत्रो वेदे' (निरुक्त १/२)

अल्पज्ञ होने से मनुष्य की विद्या तो अनित्य है, परन्तु परमेश्वर का ज्ञान होने से वेद सम्पूर्ण कर्मों का बोधक है। वेद में ज्ञान-विज्ञान किस प्रकार भरा हुआ है, इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-

(अथर्व. ६/४/११) मनोविज्ञान के विषयों का संकलन स्पष्ट प्रतीत होता है।

(यजु. १७/४०) सूर्य के सुषुम्णा नामक किरण से चन्द्रमा प्रकाशित होता है।

(ऋ. १/७९/२) सूर्य पर बड़े-बड़े गढ्ढे और काले धब्बे हैं, जिसमें अपनी पृथिवी जैसे ग्रह समा सकते है।

(अथर्व. १४/१/२) सूर्य की ऊर्जा का स्त्रोत सोम अर्थात् हाइड्रोजन है।

(अथर्व. १/१६१/७) समस्त अदृष्ट क्रिमियों तथा पीड़ा पहुँचानेवाले क्रिमियों को नष्ट करता हुआ विश्व को देखनेवाला सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है।

ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में उल्लेख है कि सूर्य ने अपने आकर्षण से पूरे द्युलोक को रोका हुआ है-

'सूर्येण उततभिता द्यौः।' (ऋ. १०/७५/१)

'अस्कम्भने सविता द्याम अदृंहत्।' (ऋ. १०/१४१/१)

'एको अन्यत्चकृषे विश्वम् आनुषक्' (ऋ. १/५२/१४)

अर्थात्-प्रत्येक परमाणु अन्य सभी परमाणुओं को निरन्तर अपनी ओर खींचता है। (अथर्व. १७/३/७५) में पृथिवी की उत्पत्ति सूर्य से बताई गई है।

वृक्षों में रक्षक तत्त्व - (अथर्व. १०/७/३१) में स्पष्ट उल्लेख है कि रक्षक तत्त्व (क्लोरोफिल) के कारण वृक्षों में हरियाली रहती है।

वेद और वैदिक साहित्य में अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्रों का वर्णन मिलता है, इन अस्त्रों के उपसंहारक अस्त्रों का वर्णन और शस्त्रास्त्रों के दुष्प्रभाव को रोकनेवाले अस्त्र भी होते थे। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के बालकाण्ड के २७ वें सर्ग में दिव्यास्त्रों तथा शस्त्रों की चर्चा की है।

जनवरी 1977 में दिल्ली में सम्पन्न सर्जिकल कॉलेजों के अंतर्राष्ट्रीय महासंघ के अध्यक्ष प्रो. विटोल्ड रुडोविस्की ने प्लास्टिक सर्जरी का मूल ऋग्वेद में बताते हुए विभिन्न प्रकार के ऑपरेशनों और उनमें काम में आने वाले लगभग एक सौ औजारों का उल्लेख किया था।

जो क्षण व कण को बचाने की कला जानता है, वह संत है।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

वेद के अंग ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य से पृथिवी का अंतर 1 करोड़ 30 लाख मैलोन है जिसे वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। सूर्य पृथिवी से 13 लाख गुणा बड़ा है। सौर गणना, ऋतु आदि का ज्ञान, चन्द्र कालगणना जैसे विज्ञान का उल्लेख ज्योतिष के हिमाद्रि नामक ग्रंथ एवं वेदों से ज्ञात होता है। काल नित्य है एवं इसकी गणना को (अर्थव. १९/५३) में ब्रह्मदिवस १००० चतुर्युगी का = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष कहा है।

विज्ञान के अनुसार प्राणी शरीर के मूलबिन्दु तत्त्व= क्रोमोसोम्स के आधार पर कृत्रिम मानव शरीर की रचना (क्लोन बेबी) की है। महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं-आदि सृष्टि में मानवोत्पत्ति अमैथुनी (नर-मादा का परस्पर सम्पर्क नहीं होता) होती है। वैज्ञानिकों द्वारा क्लोन बेबी के निर्माण में किया जा रहा प्रयत्न इसी प्रक्रिया का द्योतक है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिन्स ने आज प्रमाणित किया है कि प्रलयकाल में समय का अस्तित्व रहता है। इसी बात को महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा है कि सृष्टिकाल और प्रलयकाल समान होते है।

कुछ प्रश्नों के उत्तर वेद के आधार पर ही दिये जा सकते हैं- जैसे २+२=४ ही क्यों है, इससे कम या ज्यादा क्यों नहीं? सम और विषम संख्याओं का उल्लेख (यजु. १७/२४ए२५) में आया है। शून्य का मूलभूत ज्ञान वेदों द्वारा ही सम्पूर्ण संसार को दिया गया। सप्ताह के दिन सात ही क्यों होते है? इनका क्रम रवि, सोम, ..., और अंग्रेजी में **mon, tues** में ही क्यों है? यह वार गणना और इनकी क्रमवार नामावली केवल वेदों के उपांग ज्योतिष शास्त्र की देन है। इससे स्पष्ट होता है कि वेदादि सत्य शास्त्रों में वर्णित समस्त विद्यायें कलायें वर्तमान विज्ञान पर शत-प्रतिशत सत्य प्रमाणित हुई है।

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः।
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम् ।।(यजु.७/५४)

यदि ईश्वर वेद विद्या के द्वारा अपने, जीवों के और जगत के गुण-कर्म-स्वभावों को प्रकाशित न करे, तो किसी भी मनुष्य को विद्या और इनका ज्ञान (प्राप्त) न हो सके। और इन (विद्या और विज्ञान) के बिना निरन्तर सुख कहां से हो सकता है? - सत्यार्थ दूत सरोज आर्या

भिवाड़ी (अलवर) में आर्य समाज स्थापना का संकल्प

आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आपके नगर भिवाड़ी में 'आर्य समाज' की स्थापना होने जा रही है। इसी उपलक्ष्य में दिनांक 1,2 व 3 मार्च 2013 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान पहुँच रहे हैं। अतः आप सब भाई-बहनों से निवेदन है कि आप इस शुभ कार्य में अवश्य भाग लें।

इस कार्यक्रम में आपको वैदिक धर्म के सत्य सिद्धान्तों, जीवन जीने की सच्ची कला, समाज व राष्ट्र सेवा के अवसर, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की विधि, प्रकृति-जीव व ईश्वर के वास्तविक स्वरूप, योग व यज्ञ की जानकारी सहज ही सुलभ हो जायेगी। स्थान सिटी कॉनवैन्ट स्कूल, 237, सैक्टर-4, यू.आई.टी., भिवाडी (अलवर)

महर्षि दयानन्द के अमूल्य योगदान

* सर्वोच्च प्राथमिकता मानकर ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य का प्रणयन कर समस्त मानव जाति के लिये अभ्युदय और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया- यह महर्षि का सबसे बड़ा योगदान माना जा सकता है।
* ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीनों का समन्वय ही एक सर्वांगीण जीवन प्रणाली का आधार बन सकता है। ज्ञान, कर्म, उपासना का यह समन्वयवादी दर्शन महर्षि का मानव जाति को अमूल्य उपहार है।
* वेद उपनिषद् चिन्तन से पूरित, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सज्जित और प्रौद्योगिकी विकास की ओर उन्मुख शिक्षा दर्शन महर्षि की विश्व समुदाय को अपूर्व देन है।
* सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे अनुपम ग्रंथ लिखकर समूचे विश्व ज्ञानकोष को नई दिशा देकर वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया।
* राष्ट्रीय चेतना के संवाहक के रूप में विच्छिन्न भारत को एकता के सूत्र में बाँधने का महान् कार्य किया।
* विश्वबन्धुत्व के प्रणेता के रूप में उनके दर्शन में मानवमात्र के हित चिन्तन और विश्व शांति का संदेश मिलता है।
* आर्य समाज और परोपकारिणी सभा की स्थापना कर वैदिक संस्कृति का संवर्धन और प्रसार सदैव के लिए सुनिश्चित कर दिया।

- आर.एस. कोठारीए जयपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वा मुद्रित। सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनस सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।